स्त्री : प्रतिमा आणि वास्तव
छवि और यथार्थ

मुख्य संपादक
डॉ. सतीश पावडे

Women: Image and Reality

अनुक्रमणिका

१	फिल्मों में स्त्री-छवी	डॉ. उषा वैरागकर आठले/३
२	मोहन राकेश के प्रमुख नारी-पात्रों की सौंदर्य छवि एवं यथार्थ	डॉ. सोनू जेसवानी /८
३	मनुस्मृति में स्त्री छवी	डॉ. सरोज मधुकर तिरपुडे/११
४	संस्कृत नाटकों में स्त्री छवी :- मृच्छकटिकम् के विशेष संदर्भ में।	विधु खरे दास/१५
५	हिम्मतमाई, ब्रेख्त : एक अध्ययन	प्रा. डॉ. संयुक्ता थोरात/ १७
६	आधुनिककाल के पूर्व हिंदी साहित्यमें स्त्री विमर्श	डॉ. आनंद बक्षी/२०
७	ब्रेख्त के रंगमंच में स्त्री की "हिम्मत..."	डॉ. सुरभि विप्लव /२२
८	"स्त्री: छवी और यथार्थ ''	किष्णा पासवान/ २४
९	नारी श्रंगार : सिनेमाई दृष्टिकोण और धार्मिक हस्तक्षेप	हुस्न तबस्सुम 'निहां'/२७
१०	नादिरा बब्बर के नाटकों में स्त्री-विमर्श का स्वर	प्रा. सुधा जांगिड़/ ३०
११	बुद्धिष्ट रंगमंचपर आधुनिक स्त्रि रंगकर्मीका अस्तित्व	विरेंद्र गणवीर/ ३४
१२	मूक तथा शुरुआती सवाक हिंदी फिल्मों में स्त्री छवि एक ऐतिहासिक पड़ताल	आशीष कुमार /३८
१३	फिल्मों में स्त्री छवी'	प्रज्ञा मेश्राम/४४
१४	बिहार की लोकगाथा 'रेशमा-चुहड़मल' में स्त्री छवी	रोहित कुमार/४७
१५	यवतमाल जिले में निवासरत कोलाम जनजाति की सांस्कृतिक विरासत एवं बदलते परिवेश में कोलाम स्त्रियों की बदलती छवि	अर्चना भालकर/४९
१६	टीवी विज्ञापन फिल्मों में बदलते महिला चरित्र - एक अध्ययन	मनीष कुमार जैसल /५३
१७	८० के दशक की स्त्री:छवी और यथार्थ का चित्रण मराठी नाटक "पुरुष"	चैतन्य आठले/५६
१८	साहित्य, समाज और स्त्री	ऋतु रानी/५९
१९	हिंदी नाटकों में मिथक की परंपरा एवं प्रयोग की पीठिका पर स्त्री विमर्श	अभिषेक त्रिपाठी,शाइस्ता सैफी/६१
२०	गिरीश कर्नाड के नाटको में स्त्री की छवी	संजीत कुमार/६४
२१	वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, समस्याएं एवं सूझाव	विरेन्द्र कुमार/६६
२२	विजय तेंदुलकर के नाटकों में स्त्री	प्रदीप त्रिपाठी/७०
२३	स्थानीय राजनीति का जेंडर पक्ष और महिला शासन	मनोज कुमार गुप्ता /७३
२४	फिल्मों में स्त्री छवी और यथार्थ	अंकिता रासुरी/७६
२५	हिंदी सिनेमा में परम्परागत छवी के विपरीत स्त्री यथार्थ	राजेश अहिरवार /७८
२६	आधुनिकता एवं स्त्री छवी	योगेश शर्मा,/८२
२७	साहित्य और स्त्री छवी	आलोक निगम/८४
२८	बदलते महिला केन्द्रित हिन्दी सिनेमा का विवेचन	दीपिका / ८६
२९	वऱ्हाडी बोली के लोकगीतों में नारी विमर्श	डॉ. संगीता जगताप/ ८९
३०	सामाजिक परिवर्तन में महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता	डॉ. दिनेश चंदरजी निकाळजे /९१
३१	आधुनिक नारी के सामने चुनैतियाँ: साहित्यकार विष्णुप्रभाकर के रचनाओं में	डॉ. शालिनी वाटाने /९३
३२	हिंदी सिनेमा में आदिवासी स्त्री	अमरेन्द्र प्रताप सिंह /९६
३३	महात्मा ज्योतीराव फुले के साहित्य में नारी चेतना	प्रा. डॉ. सुशांत एस. ठोके /९९
३४	दलित महिला कहानी लेखन में अभिव्यक्त प्रेम	रंजीत कुमार निषाद /१०१
३५	लोकगीत: स्त्री वेदना का चेतस इतिहास और पितृसत्तात्मक प्रतिरोध	राहुल /१०४
३६	साहित्य और स्त्री छवि (विशेष हिंदी साहित्य)	आरती कुमारी /१०७
३७	बस्तर के आदिवासी स्त्रियों का संघर्षमय जीवन	रामदेव जुर्री /१०९
३८	स्त्री के बदलते स्वरूप: एक दर्शन	धनेश कुमार कन्नौजे /११२
३९	भारतीय लोकनाट्य में स्त्री विषय भागीदारी एवं प्रभाव	कविता सिंह चौहान /११५
४०	महर्षि मनु के मनुस्मृतिमें स्त्री	प्रवीण पाठक /११८

ISBN: 978-81-89839-99-4

आधुनिककाल के पूर्व हिंदी साहित्यमें स्त्री विमर्श

डॉ. आनंद बक्षी
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय चिखलदरा
जिला अमरावती महाराष्ट्र

यूँ तो आज के युग में विविध विमर्श की भीड़ सी लगी हुई है। नारी विमर्श,दलित विमर्श,मुस्लिम विमर्श आदी। नारी किसी भी विमर्श मोहताज नहीं है। वह दुर्गा है, काली है, चंडी है समय पर गऊ है। इसी विमर्श पर हम प्रकाश डालते हैं। विमर्श का शब्दश: अर्थ है- विचार, विवेचन, परीक्षण, समीक्षा, गुण दोष की मीमांसा, परामर्श, तर्कज्ञान। १ हिंदी में विमर्श क्पेबवनतमसे आया है जिसका अर्थ वर्ण्य विचार पर सुदीर्घ गंभीर चिंतन। किसी भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मानसिक, संस्कारिक , वैचारिक, बौदद्दिाक आदि किसी भी घटना परिस्थिती को विविधोगी दृष्टिकोन से उलट पुलट जीवंत बहस द्वारा समाहार करना विमर्श कहलाएगा। हमे यह ना भूलना चाहिए की स्त्री लेखन और स्त्री विमर्श दोनों अलग है। स्त्रियों द्वारा किया गया लेखन स्त्री लेखन कहलाएगा। किंतु स्त्री हो या पुरूष दोनों द्वारा जब स्त्री समस्या को उठाया जाएगा तब वह स्त्री विमर्श से युक्त लेखन कहलाएगा।

अत: सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, मानसिक, वैचारिक, ऐतिहासिक, संस्कारिक, बौदिधक, आर्थिक, पारंपारिक आदि का पुन: निरीक्षण। अत: कोमल भावनिर्मिति, त्यागमयी आदर्श मूर्ति संसार संचालनकर्ती, दया, माया, ममता, क्षमाशालिनी इन गुणों के अपने हदय में समादित कर चलनेवाली विश्व की तमाम स्त्रियों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनितिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैचारिक, बौध्दिक, मानसिक, पारंपारिक, दैन्य दु:ख, पीडा गुलामी यातना शोषण अन्याय अत्याचार दरिद्रता निर्धनता पुरूष वर्चस्व खिलाफ उत्पन्न स्वभाविक आक्रोश प्रस्तापित व्यवस्था प्रति विद्रोह रूढी वर्ग वर्ण भाग्य इत्यादि वाद प्रति नकाराभिव्यक्ति आदि स्त्री समस्याओं को केंद्र में रखकर उसका पुन:निरीक्षण कर मानवीय दृष्टि से प्रामाणिक मार्मिक अभिव्यक्ती प्रदान करनेवाला लेखन स्त्री विमर्ष से युक्त लेखन कहलाएगा।

एक स्त्री अपने भोगे हुए अनुभवों को जितनी अधिक गहराइयो एव सशक्तता यथार्थतता से व्यक्त कर सकती है। भले ही पुरूष उतनी गहराई आत्मानुभूती से व्यक्त नही करता वह किंतु यह भी बात उतनी ही सच है कि, हर पुरूष में एक स्त्री और हर स्त्री में एक पुरूष छुपा होता है। प्रतिभाशाली पुरूषों में भी स्त्री अपनी पुर्ण करूणा मार्मिकता प्रखरता से सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। इसके दर्शन हमें कबीर, सुर, तुलसी, जायसी, प्रेमचंद, प्रसाद, निराला आदि के साहित्य मे होते है।

प्राचीन काल में देश मे शिक्षा का काफी प्रसार प्रचार था। गारगी मैत्रेयी, सुलभा जैसी स्त्रियों ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड दी थी । वैदिक काल में घोशा काछीवती जैसी स्त्रियों का वैदिक रूचाओ के निर्माण से उपनिषधों, भाष्यो, तर्कशास्त्रो, काव्यों आदि में योगदान रहा है। काव्य एवं साहित्य सृजन के क्षेत्र में स्त्रियों कि भारत में लंबी परंपरारही है। सिर्फ भारत ही नही समुच्चे विश्व में नारी का स्थान सवाफ्रपरी रहा है। इसी कारण युगो युगो से वह पूजनीय वंदनीय रही है। मनुस्मृर्ति में कहा भी गया है कि,

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रनास्तन पूज्यन्ते सर्वास्त त्राफला क्रियाछ।।

अर्थात जहा नारियों की पूजा होती है वहा देवता भी निवास करते है।और जहा नारी का अपमान होता है वहा किया गया सब कार्य निष्फल होता है। मनुस्मृर्ति में मनु ने जहॉ एक और नारी गुणगान किया वही दूसरी और कई बंधनो में बांध दिया। नारी को बचपन में पिताधीन युवा अवस्था पतिधीन तथा वृध्द अवस्था में पुत्राधीन करार देकर पराधीन कहा गया है। एक ओर घर के बाहर स्त्री अत्याचारो की निंदा तो दूसरी और घरमें ही स्वयं स्त्री पर अत्याचारो का कहर ढहाया गया। एक और उसे देवी पद पर असीन कर महिमा मंडण किया गया तो दूसरी और " मदिर के देवता के समान यह सब उसकी मौनजडता में ही अपना कल्याण समझते रहे उसके अत्याधिक श्रध्दालु पुजारी भी उसकी निर्जिवता को ही देवत्व का प्रधान अशं मानते रहे। और आज भी मान रहे है।"२

भारत स्त्री की राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य, समाज, नृत्य, फॅशन, विज्ञान, कानुन, प्रशासन आदि में लंबी परंपरा होने के बावजूद पुरूष वर्चस्वो से उसे घरके चार दीवारी में बंदीस्त रखने का अभिलाषी है। '' भारतीय पुरूष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंगीबेरंगी पक्षी पाल लेता है।उपयोग के लिए गाय या घोडा पाल लेता है। उसी प्रकार

ISBN: 978-81-89839-99-4

वह एक स्त्री को भी पालता है। तथा पालित पशु पक्षियो के समान वह उसके शरीर और उसपर अपना अधिकार समझता है।''३

हिंदी साहित्य विभिन्न कालों के माध्यम से स्त्री विमर्श को हम निम्न तरह से समझ सकते है। आदिकाल में जैन, सिध्द, नाथ, रासो, लौकिक, आदिविविधांगी साहित्य की रचना हुई। सिध्द जैन नाथ साहित्य में पुर्वानुभवा से प्रभावित होकर स्त्री निम्न कोटी के रूप का उद्घाटन करते हुए स्त्री को पुरूष उन्नति में औरधक वर्णन हुआ। किंतु रासु साहित्य में स्त्री के दूसरे रूप में प्रेम सौदर्य एवं रूप सौदर्य के दर्षन मिलते है। अर्थात आदिकालीन साहित्य में स्त्री के विविध रूपो का दर्शन हुआ है। भक्ति काल तक आते आते नारी जीवन कई उलझनो विसंगतियो से घिरा रहा परिणामत: भक्ति कालीन साहित्य में स्त्री विमर्श आधिक सशतक्ता से निखार पाकर उदघाटित हुआ। कबीर नाथ योगियो से प्रभावित होने से जहॉ एक और स्त्री को दुय्यम मानकर उससे दूर रहने की बात करते है। वही कुलीन नारी के गुणो की महिमा गाकर नतमस्तकित भी होते है। जायसी के पद्मावत की कथा पुरूषी व्यवस्था मे स्त्री विमर्श के कई सवाल निर्माण करती है। तुलसी के यहॉ जहॉ एक ओर नारी को ताडनधिकारी माना है तो दुसरी ओर वही रामचरितमानस में स्त्रियों के विविध आयामों को मनोविज्ञान को करूण कंदन की विवेषता को सशक्तता से अभिव्यक्त किया गया है। सूर के सूरसागर में भ्रमरगीत तो स्त्री विमर्श का एक मजबूत पक्ष है। अत: भक्तिकालीन पूर्वांध में स्त्री विमर्श में विविध पहलूओं रूपों का युगानुरूप प्रतिबिंब अधोरेखित हुआ है।

भक्तिकाल के उत्तरार्ध या उत्तर भक्तिकाल में भी मीरा से पूर्व संतो से प्रभावित होकर अटठारहवी शताब्दी के उत्तरार्ध में चरणदास की शिष्या दयाबाई और सहजोबाई की निर्गूण भक्तिभावना की रचनाओं को प्रसिदिध् प्राप्त हुई । ये दोनों चचेरी बहने थी। सहजोबाई दिल्ली के हरिप्रसाद वैश्य की पुत्री थी। उनका जन्म १७४३ ई.में हुआ। उनकी रचनाए सहज प्रकाश में संग्रहीत है। उत्तर भक्तिकालीन में मीरा ही ऐसी थी जिसने पुरूषों द्वारा निर्माण स्त्री शोषण व्यवस्था में परिवर्तन लाने का साहसिक कार्य स्त्री विमर्श को लेकर किया जो परंपरागत समाज व्यवस्था की मान्यताओं, ध ारणाओं एकांगी दृष्टिकोनो पर बहूत बडा प्रश्न चिन्ह लगाती है। अत: मीरा के पदों में स्त्री विमर्श अपनी पूर्ण क्षमता से व्यक्त हुआ है।

उत्तर मध्यकालीन या रीतिकाल में बेशक स्त्री साहित्य के केंद्र में रही है किंतु परंपरागत दृष्टि से अलग हटकर उसके मांसल रूप का ही वर्जन अधिक हुआ। क्योंकि बिहारी जैसे अधिकतर कवियों पर सामंती दृष्टि का ही अधि ाक प्रभाव था। उनकी नजरों में स्त्री का न मॉ, न बहन, न बहू, न बेटी के रूप में वर्णन हुआ बल्कि नारी को मात्र भोग की वस्तू तक सीमित रखकर उसके रूप सौंदर्य एवं भोग का ही अधिक वर्णन हुआ है। रीतिकाल में स्त्री को मात्र भोग की दृष्टि से देखा गया है। इसी भोगवादी दृष्टि का साहित्य में भी जयघोष हुआ। स्त्री की उन तमाम कियाओं को रूपायित किया गया। जिनसे भोगवाद का बढावा मिले। विलासता की प्रधानता और सामंतीय प्रभाव के कारण ही इन लोगों की सौंदर्य भावना भी विषयीगत न होकर विषयगत रही है नारी के बाहय रूप भी परिचायक अंगो की बनावट में इनकी दृष्टि उलझी रही है, उसके आंतरिक गुणों तक न पहूँच पायी। इसके बावजूद रीतिकाल मे शेख रंगऐजिन जैसी स्त्रियों का साहित्य अच्छा माना जा सकता है।

संदर्भ

१. कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुंकुदीलाल श्रीवास्तव वृहत हिंदी कोष पुर्नमुद्रित जून २०१२, पृ १०५९.
२. महादेवी वर्मा श्रृखंला की कडिया पृ ९२ लोकभारती प्रकाषन इलाहाबाद २०१० ३. वही पृ ७२

आधारग्रंथ

१. सं. डॉ नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयुर पेपर बैंक्स, नोएडा २००३
२. जगदीष्वर चतुर्वेदी स्त्रीवादी साहित्य विमर्ष, अनामिका पब्लिषर्स एंड डिस्टीब्युटर्स दिल्ली २०००
३. डॉ. नगेन्द्र हिंदी साहित्य का इतिहास मयूर पेपर बैक्स नोएडा २००३
४. डॉ. रामचंद्र षुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास लोकभारती प्रकाषन इलाहाबाद २०१२
५. दिनेष कुमार स्त्री विमर्ष और हिंदी साहित्य, वाडमःय त्रैमासिक पत्रिका वर्ष ११ अंक जुलाई २०१४
६. बच्चन सिंह हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास राधाकृश्ण प्रकाषन प्रा. लि. दिल्ली २०००
७. प्रभा खेतान साहित्य के नये आयाम स्त्री विमर्ष छत्तीसगढ मित्र पत्रिका वर्ष ४ अंक ३ अक्तुबंर २०१४

◆◆◆

ISBN: 978-81-89839-99-4